नॉस्डॉक अनुसंधान सूचना श्रृंखला: 1

नवागत पुस्तकें

(सारांश के साथ नई प्रविष्टियों की सूची)

दिसंबर (हिंदी विशेष), 2024

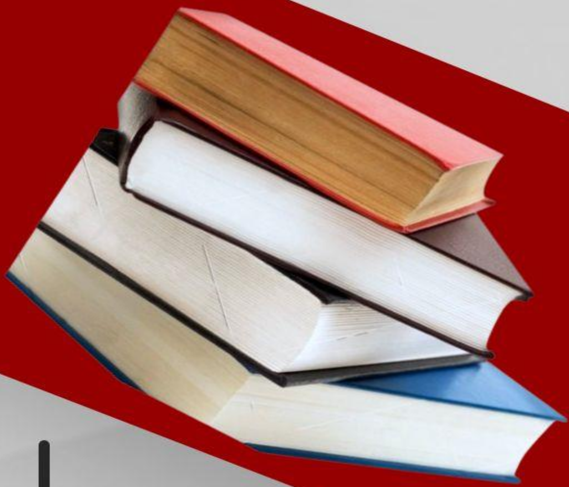

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद

राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान प्रलेखन केंद्र

35, फिरोजशाह रोड,

नई दिल्ली – 110001

©नॉस्डॉक - आईसीएसएसआर
****
नवागत पुस्तकें: सारांश के साथ नए संकलन की सूची
नॉस्डॉक टीम द्वारा संकलित एवं संपादित,
राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान प्रलेखन केंद्र, २८पृ.
(नॉस्डॉक अनुसंधान सूचना श्रृंखला: १)
दिसंबर, २०२४
****

प्राक्कथन

“नवागत पुस्तकें: सारांश सहित नये संग्रह की सूची” का वर्तमान अंक उन पुस्तकों की सूची प्रदान करता है जो दिसंबर २०२४ माह में संसाधित की गई हैं और जो भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर) के राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान प्रलेखन केन्द्र (नॉस्डॉक) में उपयोग हेतु उपलब्ध हैं। मुख्य पाठ में प्रविष्टियाँ शीर्षक के वर्णानुक्रम में क्रमबद्ध हैं, जिनके पश्चात पुस्तक का ग्रंथसूची विवरण एवं दस्तावेज़ का संक्षिप्त सारांश दिया गया है। सुलभ पुनःप्राप्ति के लिए लेखक सूची तथा कीवर्ड सूची भी अंत में दी गई हैं, जहाँ लेखक या कीवर्ड के सामने दिया गया संख्या मुख्य सूची में संबंधित प्रविष्टि का क्रमांक दर्शाता है। रुचि रखने वाले पाठक इन पुस्तकों का परामर्श लेने हेतु पुस्तकालय में पधार सकते हैं।

सुझावों का सदैव स्वागत है।

डॉ. एस.एन.चारी
निदेशक (प्रलेखन)

क्रं.सं.	शीर्षक और अन्य विवरण	परिग्रहण संख्या/कवर चित्र
१	नई भाजपा के शिल्पकार/ सिंह, अजय- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; २००पृ.	५४०२१

अपनी स्थापना के लगभग ४० वर्षों में भारतीय जनता पार्टी विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बन गई है और भारतीय राजनीति में अपनी स्थिति को निरंतर अधिक सुदृढ़ बनाती जा रही है। इस पार्टी का ऐतिहासिक अभ्युदय कुछ लोगों को सहज और स्वत:स्फूर्त लग सकता है, लेकिन १८ करोड़ सदस्यों के इस संगठन का मार्ग प्रशस्त करने के पीछे गहन आंतरिक विचार-विमर्शों और योजनाओं का योगदान रहा है। गहरे शोध तथा ठोस उदाहरणों के माध्यम से 'नई भाजपा के शिल्पकार' में पिछले दशकों के दौरान हुए पार्टी के कायाकल्प की व्याख्या की गई है। इस प्रसंग में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ऐसे योगदानों पर प्रकाश डाला गया है, जिनके बारे में लोग कम जानते हैं। संगठन निर्माण के पारंपरिक तरीकों से परे जाकर किए गए उनके प्रयोग, सूक्ष्मता के साथ हर आयाम पर उनकी पैनी नजर और पार्टी के जनाधार का विस्तार करने के लिए उनकी अभिनव पद्धतियों को यह पुस्तक उजागर करती है।पार्टी के संस्थापकों द्वारा सन् १९५१ में अपनाई गई दृष्टि पर आधारित अतीत के विश्लेषण के साथ-साथ अजय सिंह ने भाजपा के भविष्य की झलक भी दिखाई है। अनेक पार्टी कार्यकर्ताओं, नेताओं और समीक्षकों के साथ विस्तृत साक्षात्कारों पर आधारित विवरणों से पता चलता है कि किस प्रकार कैडर पर आधारित इस पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने पार्टी की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए एक नितांत भारतीय मॉडल को विकसित किया, जिसके आधार पर अंतत: भाजपा चुनाव जीतने वाली एक मशीन के रूप में स्थापित हो गई है।

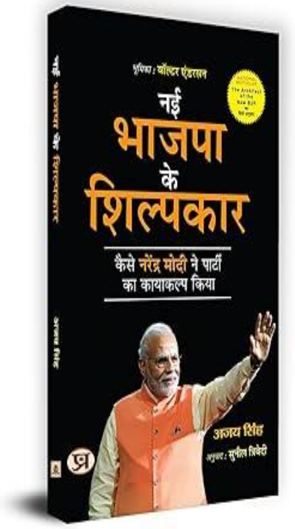

२	पकिस्तान बांग्लादेश: आंतकवाद के पोषक/ शोरी, अरुण- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; ३६१पृ.	५४०२२

भारत के एक बड़े हिस्से पर बँगलादेशी घुसपैठियों ने अपना डेरा जमाया हुआ है। देश की सुरक्षा पर इसका क्या प्रभाव पड़ रहा है? हमारे पूर्वोत्तर राज्यों में आतंकवादी और इसलामिक संगठनों को कौन जोड़ रहा है? बँगलादेश में तेजी से बढ़ रही कट्टरवादिता से क्या खतरा उत्पन्न हुआ है? आतंकवाद से निपटने में हम कहाँ चूके और इससे हमने क्या-क्या सबक सीखे हैं?

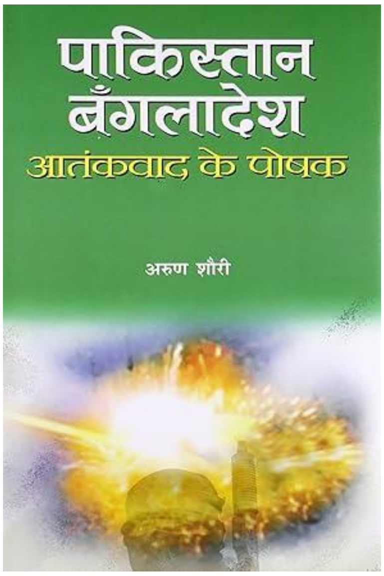

३ परिव्राजक: मेरी भर्मण कहानी/ विवेकानंद, स्वामी- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; १३६पृ. ५४०२३

स्वामी विवेकानंद ने भारत में उस समय अवतार लिया, जब हिंदू धर्म के अस्तित्व पर संकट के बादल मंडरा रहे थे। हिंदू धर्म में घोर आडंबर और अंधविश्वासों का बोलबाला हो गया था। ऐसे में स्वामी विवेकानंद ने हिंदू धर्म को एक पूर्ण पहचान प्रदान की। इसके पहले हिंदू धर्म विभिन]न छोटे-छोटे संप्रदायों में बँटा हुआ था। तीस वर्ष की आयु में स्वामी विवेकानंद ने शिकागो (अमेरिका) में विश्व धर्म संसद] में हिंदू धर्म का प्रतिनिधित्व किया और इसे सार्वभौमिक पहचान दिलाई। प्रस्तुत पुस्तक 'परिव्राजक मेरी भ्रमण कहानी' में स्वामीजी ने अपनी यूरोप यात्रा के माध्यम से सरल शब्दों में तत्कालीन इतिहास, कला, समाज, जीवन-दर्शन इत्यादि का अत्यंत रोचक वर्णन प्रस्तुत किया है। इनके माध्यम से व्यक्ति अपने तत्कालीन ज्ञान-दर्शन को सहज ही प्रशस्त कर सकता है। स्वामी विवेकानंद की यात्रा-वृत्तांत की यह पुस्तक हमें सांस्कृतिक-सामाजिक यात्रा का आनंद देगी।

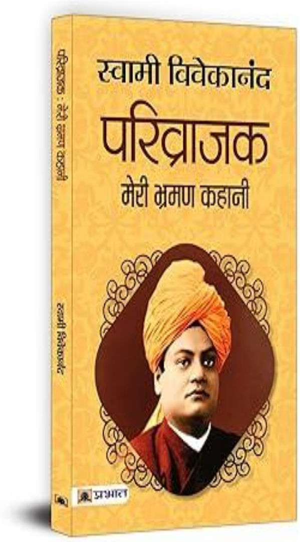

४ पुर्नजन्म/ सेकिव, वॉलटर- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; ४३१पृ. ५४०२४

पुर्नजन्म से संबंधित मामलों में दुनिया भर में डॉ. वाल्टर सेम्किव को निर्विवादित रूप से सर्वोच्च विशेषज्ञ माना जाता है। इस पुस्तक में पुनर्जन्म से संबंधित बेशुमार लोकप्रिय मामलों को बेहद सरल सारांशों के साथ संकलित किया गया है। पुस्तक में लेखक ने पुनर्जन्म के सिद्धांतों की भी बहुत सरल ढंग से समीक्षा की है। बताया गया है मुखाकृति; व्यक्तिगत गुणावगुण; पसंद-नापसंद; प्रतिभा और आदतें भी आश्चर्यजनक ढंग से एक जीवन के बाद दूसरे जीवन में भी साथ नहीं छोड़तीं। डॉ. सेम्किव ने विश्वविख्यात परा-मनोवैज्ञानिक और पुनर्जन्म विज्ञान के दिग्गज इयान स्टीवेंसन द्वारा किए गए शोध का जिक्र करते हुए यह भी बताया है कि जीवन भर साथ निभानेवाली अनेक आत्माएँ एक साथ पुनर्जन्म हासिल कर लेती हैं। कई मामलों में स्त्रियाँ पुरुष बन जाती हैं और पुरुष स्त्री। इस पुस्तक में क्सेनोग्लॉसी (परा-भाषा) मामलों का भी जिक्र है; जिनमें पाया गया कि मरने के बाद भी पिछले व्यक्तित्व का नाश नहीं होता और कई लोगों में ऐसी अद्भुत क्षमताएँ आ जाती हैं; जो उन्होंने कहीं सीखीं ही नहीं। देश; जातियाँ और धर्म भी पुनर्जन्मों के समय बदलते रहते हैं। डॉ. सेम्किव कहते हैं कि पुनर्जन्म मामलों की इस जानकारी से मानवता को संकीर्ण सोच से ऊपर उठने की प्रेरणा मिलेगी।

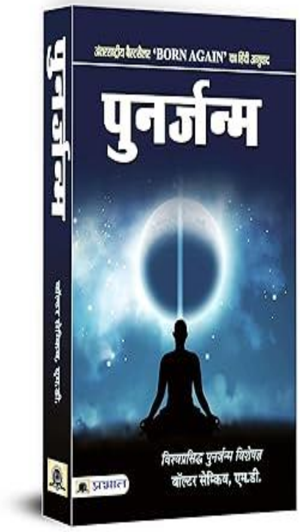

५ प्रेमयोग/ विवेकानंद, स्वामी- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, ५४०२५
२०२३; १२०पृ.

प्रेमयोग स्वामी विवेकानंद द्वारा रचित एक अद्वितीय ग्रंथ है, जो प्रेम की दिव्य और आध्यात्मिक शक्ति को उजागर करता है। यह पुस्तक वेदांत दर्शन पर आधारित है और यह समझाने का प्रयास करती है कि प्रेम मात्र एक मानवीय भावना नहीं है, बल्कि यह स्वयं ईश्वर का स्वरूप है। स्वामी विवेकानंद ने इसमें यह दर्शाया है कि निःस्वार्थ प्रेम, जो आसक्ति और अहंकार से मुक्त हो, आत्मा को परमात्मा से एकाकार करने का मार्ग है।इस पुस्तक में सांसारिक और दिव्य प्रेम के बीच का अंतर स्पष्ट किया गया है। स्वामी विवेकानंद का मानना है कि दिव्य प्रेम सभी बंधनों और सीमाओं से परे है और यह

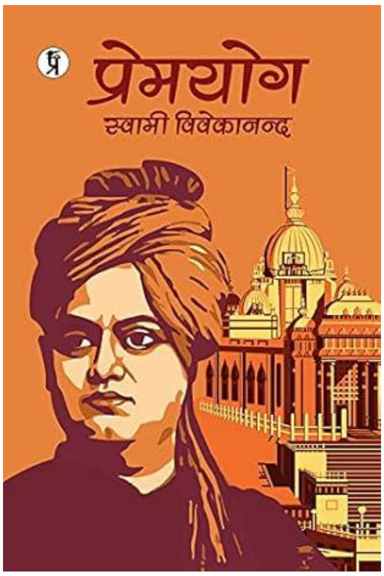

मनुष्य को सच्ची स्वतंत्रता और शांति प्रदान करता है। उन्होंने प्रेम को एक आध्यात्मिक साधना के रूप में अपनाने की प्रेरणा दी है और करुणा, विनम्रता और निःस्वार्थता जैसे गुणों को विकसित करने पर बल दिया है।प्रेमयोग न केवल व्यक्तिगत आध्यात्मिक विकास का मार्गदर्शन करता है, बल्कि यह सार्वभौमिक भाईचारे और मानवता के कल्याण की प्रेरणा भी देता है। यह पुस्तक उन साधकों के लिए अमूल्य है जो प्रेम के माध्यम से ईश्वर से जुड़ने की आकांक्षा रखते हैं। स्वामी विवेकानंद के विचार इस पुस्तक को कालजयी और प्रेरणादायक बनाते हैं।

६ बाटला हाउस एनकाउंटर का सच/ सिंह, कर्नल- प्रभात ५४०२६
प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; २२४पृ.

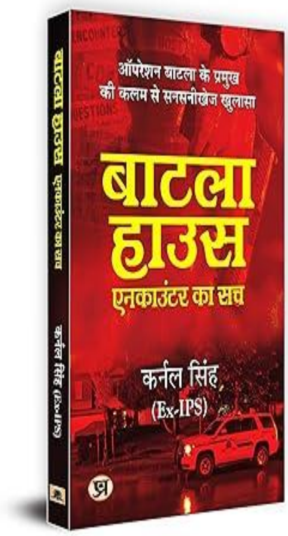

सितम्बर 2008: एक के बाद एक अनेक बम धमाकों ने दिल्ली को दहलाकर रख दिया। जाँच-पड़ताल के बाद दिल्ली पुलिस की एक विशेष टीम ने बाटला हाउस के फ्लैट नं. 108 पर छापा मारा। टीम को स्पष्ट निर्देश दिए गए थे कि फ्लैट पर छापा मारकर संदिग्ध आतंकवादियों को जिंदा गिरफ्तार करना है। इसके बाद जो हुआ, उसने एक मुठभेड़ का रूप धारण कर लिया और राजनीतिक गलियारे में तूफान ला दिया। यह घटना आज भी मीडिया-जगत् में उग्र एवं विवादास्पद मुद्दा बनी हुई है। बाटला हाउस इस ऑपरेशन का नेतृत्व कर्मठ एवं जुझारू पुलिस अधिकारी कर्नल सिंह ने किया था। देश को झकझोर देनेवाली इस मुठभेड़ की पल-पल की घटनाओं का वह स्वयं यहाँ वर्णन कर रहे हैं। इंटेलिजेंस ब्यूरो से मिली सूचनाओं, भारत के विभिन्न शहरों में घटी घटनाओं, भिन्न-भिन्न पहलुओं तथा स्थानीय संदेशवाहकों व गुप्तचरों द्वारा प्राप्त विशेष खबरों के आधार पर उन्होंने इस मुठभेड़ की घटनाओं को सिलसिलेवार जोड़कर एक कहानी का रूप दिया है, जिसने गुप्त और खूँखार इंडियन मुजाहिद्दीन के अंत की शुरुआत को चिह्नित किया है। आतंकवाद और आतंकियों को शह देनेवाले राष्ट्रघातकों मुठभेड़ का जीवंत दस्तावेज है यह पुस्तक 'बाटला हाउस'।

७ भक्तियोग/ विवेकानंद, स्वामी- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; १३४पृ. ५४०२७

निष्कपट भाव से ईश्वर की खोज को 'भक्तियोग' कहते हैं। इस खोज का आरंभ, मध्य और अंत प्रेम में होता है। ईश्वर के प्रति एक क्षण की भी प्रेमोन्मत्तता हमारे लिए शाश्वत मुक्ति को देनेवाली होती है। 'भक्तिसूत्र' में नारदजी कहते हैं, "भगवान् के प्रति उत्कट प्रेम ही भक्ति है। जब मनुष्य इसे प्राप्त कर लेता है, तो सभी उसके प्रेमपात्र बन जाते हैं। वह किसी से घृणा नहीं करता; वह सदा के लिए संतुष्ट हो जाता है। इस प्रेम से किसी काम्य वस्तु की प्राप्ति नहीं हो सकती, क्योंकि जब तक सांसारिक वासनाएँ घर किए रहती हैं, तब तक इस प्रेम का उदय ही नहीं होता। भक्ति कर्म से श्रेष्ठ है और ज्ञान तथा योग से भी उच्च है, क्योंकि इन सबका एक न एक लक्ष्य है ही, पर भक्ति स्वयं ही साध्य और साधन-स्वरूप है।"

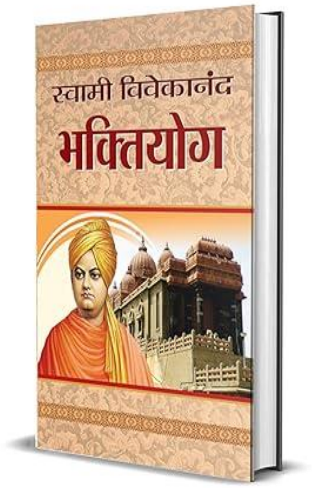

८ भारत २०२० और उसके बाद/ कलाम, ए. पी. जे .अब्दुल- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; १७४पृ. ५४०२८

गरीबी व बेरोजगारी और ज्यादा बढ़ जाएगी; जो हमारे समाज को अंतर्विस्फोट की ओर ले जाएगी। और अगर हम बदलाव लाएँगे तो हम वास्तविक प्रगति कर पाएँगे– गरीबी से समृद्धि की ओर; गतिरोध से तीव्र विकास की ओर। ' 'भारत २०२० और उसके बाद' नामक यह पुस्तक इस रूपांतरण के लिए एक पूरी कार्ययोजना प्रदान करती है।

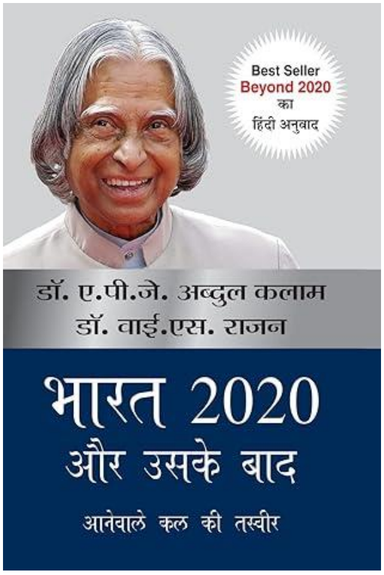

९ भारत अफगानिस्तान संबध: इतिहास एवम विदेश नीति के आइने में/ रथ, सरोज कुमार- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; २८४पृ. ५४०२९

प्राचीन साहित्य पर आधारित लेखों से प्रेरणा लेते हुए तथा अबतक अज्ञात अभिलेखीय दस्तावेजों पर निर्भर करते हुए इस पुस्तक के शोधकार्य में अधुनातन शोध-शैली को अपनाया गया है और भारत-अफगानिस्तान संबंध पर अकाट्य स्पष्टीकरण एवं सुस्पष्ट निष्कर्ष प्रदान करने का प्रयास किया गया है। बहुमूल्य यूनानी और चीनी स्रोतों का उपयोग करते हुए इस पुस्तक में प्राचीन अफगानिस्तान के भारत से जुड़े दिलचस्प संबंधों को उजागर किया गया है, जिनका संस्कृत-साक्ष्यों के प्रकाश में भी परीक्षण किया गया है। दोनों देशों की दिलचस्प तथा अब तक बहुत कम ज्ञात बातों का ब्योरा इस शोध पुस्तक में है। यूनानी और भारतीय साहित्य इस रोचक तथ्य का समर्थन करता है कि भारत और अफगानिस्तान आधुनिक सीमाओं के सीमांकन से पहले सहस्लाब्दियों तक लगभग सबकुछ साझा करते थे। यह पुस्तक भारत, अफगानिस्तान, अमेरिका और ब्रिटेन में उपलब्ध अभिलेखीय आलेखों के आधार पर भारत-अफगान द्विपक्षीय संबंधों की विवेचना करती है। इस अध्ययन में भारत की अफगान नीति के विकास की प्रयोगसिद्ध अकादमिक व्याख्या देने का प्रयास किया गया है| इसमें इस सवाल की भी पड़ताल की गई है कि किस तरह से तालिबान द्वारा दो बार तख्तापलट और जबरन शासन अवधि के बाहर, बड़ी शक्तियों और पड़ोसी देशों के साथ अफगानिस्तान के बहुपक्षीय संबंधों का भारत के साथ द्विपक्षीय संबंधों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

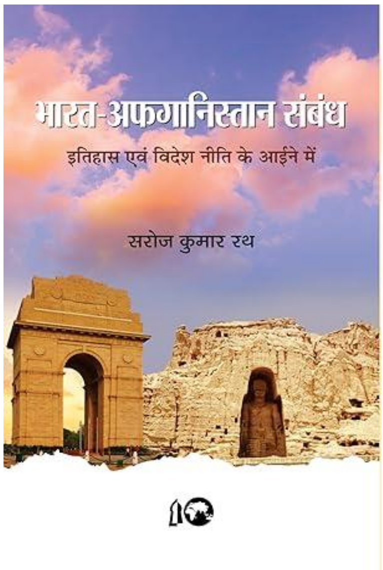

१० माय लाइफ/ कलाम, ए. पी. जे .अब्दुल- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; १०४पृ. ५४०३०

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम आजाद भारत की सबसे प्रेरक हस्तियों में से एक हैं। एक वैज्ञानिक, विचारक, शिक्षक, लेखक और भारत के प्रथम नागरिक के रूप में उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय सफलता हासिल की। इसके साथ ही एक विकसित भारत के सपने को साकार करने के संकल्प, लोगों के साथ संवाद के सीधे और सरल तरीके के साथ ही देशवासियों के प्रति अगाध प्रेम ने उन्हें कोटि-कोटि भारतीयों का चहेता बना दिया था। 'माय लाइफ' में डॉ. कलाम ने अपने जीवन की कहानी लिखी है, जिसकी शुरुआत रामेश्वरम में उनके बड़े होने से होती है, फिर भारतीय अंतरिक्ष और मिसाइल कार्यक्रमों के लिए उनका काम करना, भारत के ११वें राष्ट्रपति के रूप में उनका कार्यकाल, और उसके बाद के उनके जीवन की चर्चा है। एक अद्भुत जीवन का शानदार परिचय करानेवाली यह आत्मकथा कठिन परिश्रम, कर्मठता, साहस और नई सोच के महत्त्व को बतानेवाली कहानियों से भरी है। सुंदर वर्णन और सरल लेखन के कारण 'माय लाइफ' निश्चित ही सभी आयु के पाठकों को प्रेरित करेगी।.

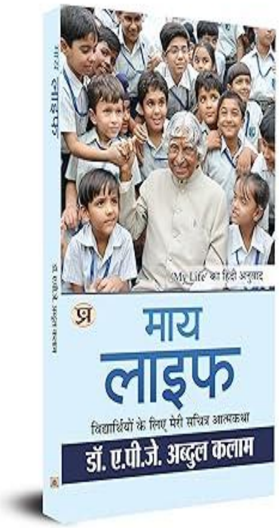

११ मुक्ति: बंधन को बंधन तो जानो/ प्रशांत, आचार्य- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; ३६८पृ. ५४०३१

हाँ पर मानव मन में 'मुक्ति' शब्द की आकर्षण की बात की गई है। मुक्ति का अर्थ, उसका महत्व और लोगों में इसके प्रति की आकर्षण की व्याख्या की गई है। यहाँ पर बाह्य और आंतरिक बंधनों के बारे में चर्चा की गई है, और यह कैसे हमारी मुक्ति की तलाश में हमें प्रभावित करते हैं। इस खंड में, बाह्य बंधनों से मुक्ति की अपूर्ण तलाश के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है। आचार्य प्रशांत के विचारों पर ध्यान दिया गया है, जिनमें बाह्य और आंतरिक बंधनों के महत्व को जानकर मुक्ति की तलाश की गई है। यहाँ पर जीवन के उद्देश्य की चर्चा की गई है, जिसमें अपनी बेड़ियों को काटने के लिए हमें तैयार होने की महत्वपूर्णता को बताया गया है। यहाँ पर भ्रमित जीवन के बारे में चर्चा की गई है, और इससे निकलने के लिए सत्य के साथ जीने के चुनाव के महत्व पर ध्यान दिया गया है। इस खंड में, मुक्ति का सच्चा

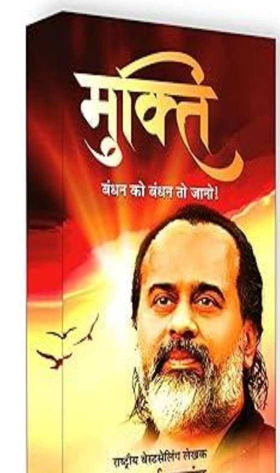

अर्थ और इसका महत्व बताया गया है, जो हमें अपनी अंतर्मुखी संवेदना के माध्यम से प्राप्त होता है। यहाँ पर यह बताया गया है कि स्वभाव में ही मुक्ति का सत्य है, और हमें अपने स्वभाव को जानने और समझने की आवश्यकता है। इस खंड में, मुक्त गगन में उड़ने के उद्देश्य की चर्चा की गई है, जो हमें अपनी स्वतंत्र और उन्नति भरी जीवन की दिशा में मार्गदर्शन करता है। इस खंड में, पुस्तक के मुख्य संदेश को सारांशित किया गया है, जो हमें स्वयं को अध्ययन करने और समझने के लिए प्रेरित करता है।

१२ मैं भूल न जाऊ/ नरीमन, फली- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; ३६०पृ. ५४०३२

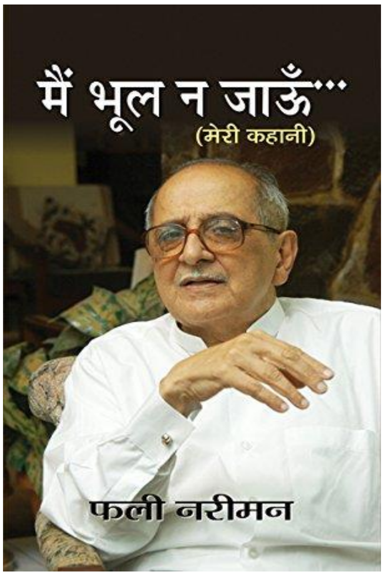

यादें धुँधलाने से पहले ’ एक उदघाटक, व्यापक और विचारात्मक आत्मकथा–खरी, सम्मोहक और आधिकारिक। कई दशकों से फली एस. नरीमन एक प्रख्यात विधिवेत्ता हैं, जिनके विचार सत्ता के गलियारों, न्यायिक और राजनीतिक दोनों में ही न केवल सुने जाते हैं, बल्कि उनका सम्मान भी किया जाता है। इस पुस्तक में रंगून में बिताए उनके बचपन से लेकर अब तक की जीवन-यात्रा को प्रस्तुत किया गया है। शुरुआत उन वर्षों से की गई है, जब उन्हें अनेक ख्यात न्यायाधीशों और वकीलों से संपर्क का सौभाग्य मिला। उसके बाद लेखक ने अनेक महत्त्वपूर्ण और विविध विषयों पर चर्चा की है, जिनमें से कुछ निम्नानुसार हैं– भारतीय संविधान की पवित्रता और उससे छेड़छाड़ के प्रयास। राष्ट्र पर निर्णायक असर डालने वाले महत्त्वपूर्ण मुकदमे, खासकर कानून की व्याख्या से संबंधित। राजनीतिक वर्ग और न्यायपालिका के अंतर्संबंध। भ्रष्टाचार का असाध्य और भयावह रोग तथा इससे लड़ने के उपाय। विद्वान् लेखक ने वकालत के पेशे की गिर चुकी विश्वसनीयता को बहाल करने के उपायों की भी चर्चा की है। इसमें उन्होंने अनेक हाई प्रोफाइल मुकदमों में अपनी भूमिका को भी प्रस्तुत किया है और राज्यसभा में अपने कार्यकाल के बारे में भी बताया है। इस सूचनात्मक, शिक्षाप्रद और विचारोत्तेजक पुस्तक को

वकालत के पेशे से जुड़े लोगों और आम पाठकों के लिए पढ़ना जरूरी है|

१३ मेरा आजीवन कारावास/ सावरकर, विनायक दामोदर- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; ४७८पृ. ५४०३३

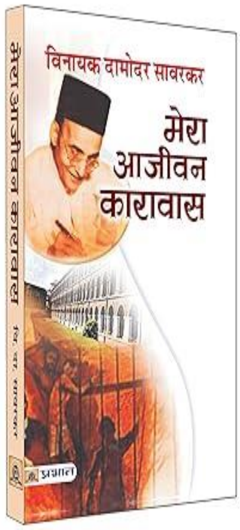

भारतीय क्रांतिकारी इतिहास में स्वातंत्रवीर विनायकदामोदर सावरकर का व्यक्तित्व अप्रतिम गुणों का द्योतक है। 'सावरकर' शब्द ही अपने आपमें पराक्रम, शौर्य औरउत्कट देशभक्ति का पर्याय है। अपनी आत्मकथा मेरा आजीवन कारावास में उन्होंने जेल-जीवन की भीषण यातनाओं- ब्रिटिश सरकार द्वारा दो-दो आजीवन कारावास की सजा सुनाए जाने के बाद अपनी मानसिक स्थिति, भारत की विभिन्न जेलों में भोगी गई यातनाओं और अपमान, फिर अंडमान भेजे जाने पर जहाज पर कैदियों की यातनामय नारकीय स्थिति, कालापानी पहुँचने पर सेलुलर जेल की विषम स्थितियों, वहाँ के जेलर बारी का कूरतम व्यवहार, छोटी-छोटी गलतियों पर दी जानेवाली अन शारीरिक यातनाएँ यथा-कोडे लगाना, बेंत से पिटाई करना, दंडी-बेड़ी लगाकर उलटा लटका देना आदि का वर्णन मन को उद्वेलित करदेनेवाला है। विषम परिस्थितियों में भी कैदियों में देशभक्ति और एकता की भावना कैसे भरी, अनपढ़ कैदियों को पड़ाने का अभियान कैसे चलाया, किस प्रकार दूसरे रचनात्मक कार्यो को जारी रखा तथा अपनी दृढ़ता और दूरदर्शिता से जेल के वातावरण को कैसे बदल डाला, कैसे उन्होंने अपनी खुफिया गतिविधियों चलाई आदि का सच्चा इतिहास वर्णित है। इसके अतिरिक्त ऐसे अनेक प्रसंग, जिनको पढ़कर पाठकउत्तेजित और रोमांचित हुए बिना न रहेंगे। विपरीत-से-विपरीत परिस्थिति में भी कुछ अच्छा करने की प्रेरणा प्राप्त करते हुए आप उनके प्रति श्रद्धानत हुएबिनान रहेंगे।.

१४ मेरे सपनो का भारत/ कलाम, ए. पी. जे .अब्दुल- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; १९६पृ. ५४०३४

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का स्वप्न है कि वर्ष 2020 तक भारत एक विकसित राष्ट्र बने। प्रस्तुत पुस्तक में लेखकद्वय डॉ. कलाम व डॉ. सिवताणु पिल्लै ने इस स्वप्न को साकार करने की प्रक्रिया का बड़ी ही सूक्ष्मता और गहराई से विश्लेषण किया है। विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में छात्र; युवा; किसान; वैज्ञानिक; इंजीनियर; तकनीशियन; चिकित्सक; चिकित्सा कर्मी; शिक्षाविद्; उद्योगपति; सैन्य कर्मी; राजनेता; प्रशासक; अर्थशास्त्र्; कलाकार और खिलाड़ियों की क्या-क्या भूमिका हो सकती है; इसके बारे में भी उन्होंने महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए हैं। हाल के वर्षों में; जीवन-स्तर को बेहतर बनाने में प्रौद्योगिकी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रौद्योगिकी एक ऐसा इंजन है; जिसमें देश को विकास तथा संपन्नता की ओर ले जाने और राष्ट्रों के समूह में उसे आवश्यक प्रतिस्पर्धात्मक लाभ उपलब्ध कराने की क्षमता है। इस प्रकार; भारत को एक विकसित देश में बदलने में प्रौद्योगिकी की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। आज भारत के पास प्रक्षेपण यानों; मिसाइलों तथा वायुयानों के सिस्टम डिजाइन; सिस्टम इंजीनियरिंग; सिस्टम इंटीग्रेशन तथा सिस्टम मैनेजमेंट की योग्यता और महत्त्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों के विकास की क्षमता है–इस पुस्तक में इन सभी पहलुओं पर अनुकरणीय प्रकाश डाला गया है।

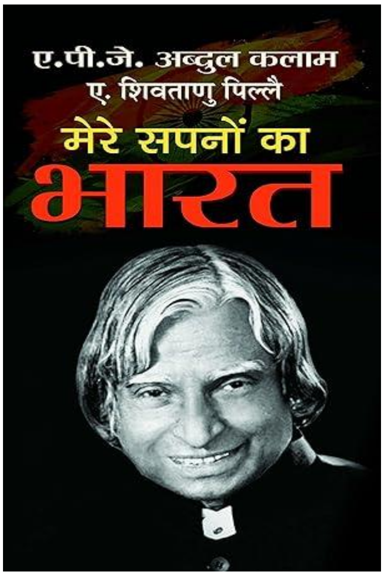

१५ मै नास्तिक क्यों हूँ?/ सिंह, भगत- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; ११५पृ. ५४०३५

यह लेख भगतसिंह ने जेल में रहते हुए लिखा था और यह २७ सितम्बर १९३१ को लाहौर के अखबार "द पीपल" में प्रकाशित हुआ। इस लेख में भगतसिंह ने ईश्वर कि उपस्थिति पर अनेक तर्कपूर्ण सवाल खड़े किये हैं और इस संसार के निर्माण, मनुष्य के जन्म, मनुष्य के मन में ईश्वर की कल्पना के साथ साथ संसार में मनुष्य की दीनता, उसके शोषण, दुनिया में व्याप्त अराजकता और और वर्गभेद की स्थितियों का भी विश्लेषण किया है। यह भगतसिंह के लेखन के सबसे चर्चित हिस्सों में रहा है। स्वतन्त्रता सेनानी बाबा रणधीर सिंह १९३०-३१ के बीच लाहौर के सेन्ट्रल जेल में क़ैद थे। वे एक धार्मिक व्यक्ति

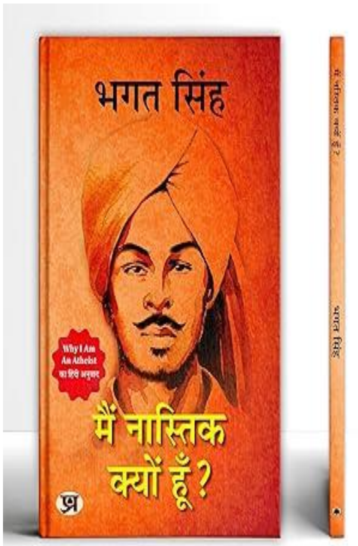

थे जिन्हें यह जान कर बहुत कष्ट हुआ कि भगतसिंह का ईश्वर पर विश्वास नहीं है। वे किसी तरह भगतसिंह की कालकोठरी में पहुंचने में सफल हुए और उन्हें ईश्वर के अस्तित्व पर यकीन दिलाने की कोशिश की। असफल होने पर बाबा ने नाराज होकर कहा, "प्रसिद्धि से तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है और तुम अहंकारी बन गए हो जो कि एक काले पर्दे की तरह तुम्हारे और ईश्वर के बीच खड़ी है। इस टिप्पणी के जवाब में भगत सिंह ने यह लेख लिखा। ऐसे ही कई महत्त्वपूर्ण लेखों का संग्रह है ये किताब।

१६ योगाभ्यास और चिंतन/ विवेकानंद, स्वामी- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; ११२पृ. ५४०३६

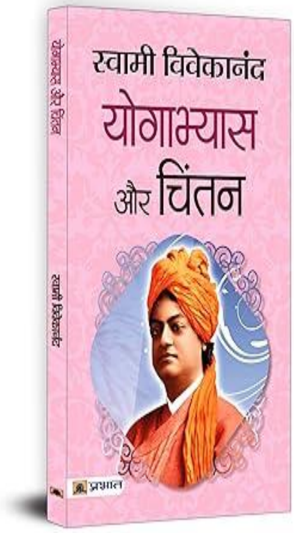

स्वामी विवेकानंद ने भारत में उस समय अवतार लिया, जब यहाँ हिंदू धर्म के अस्तित्व पर संकट के बादल मँडरा रहे थे। पंडित-पुरोहितों ने हिंदू धर्म को घोर आडंबरवादी और अंधविश्वासपूर्ण बना दिया था। ऐसे में स्वामी विवेकानंद ने हिंदू धर्म को एक अलग पहचान दिलाई। चिंतन वह द्वार है, जो हमारे लिए उसे खोलता है। प्रार्थना, औपचारिकता एवं हर प्रकार की उपासना केवल चिंतन का बाल-विहार (किंडरगार्टन) है। आप जब प्रार्थना करते हैं तो आप कुछ चढ़ावा देते हैं। पहले एक प्रथा थी कि प्रत्येक वस्तु, व्यक्ति की आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ावा देती है। कुछ शब्दों का प्रयोग, पुष्प, प्रतिमाएँ, मंदिर, ज्योति को हिलाने की प्रथा मन को उस व्यवहार तक ले जाते हैं, परंतु वह व्यवहार सदैव व्यक्ति की आत्मा के अंदर होता है, कहीं और नहीं। प्रत्येक व्यक्ति यही कर रहा है, परंतु जो वह अनजाने में कर रहा है, वही जान- बूझकर करे-- यही है 'चिंतन की शक्ति। प्रस्तुत पुस्तक में स्वामी विवेकानंद ने योगाभ्यास के माध्यम से शरीर को नीरोग कैसे रखा जा सकता है, और स्वस्थ चिंतन द्वारा जीवन में सकारात्मक ऊर्जा कैसे अर्जित की जा सकती है, इस पर विस्तार से प्रकाश डाला है। अतः हर आयु वर्ग के पाठकों के लिए एक बेहद उपयोगी पुस्तक।

१७ रक्षा विज्ञान/ बाला, मनमोहन- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; २२७पृ. ५४०३७

आदिकाल से युद्धों ने अनेक ऐसी प्रौद्योगिकियों को जन्म देने में विशेष भूमिका निभाई है, जो सभ्यता के विकास में भी महत्त्वपूर्ण रही हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में हुई औद्योगिक क्रांति से सैन्य प्रौद्योगिकी में मूलभूत परिवर्तन आए थे, जो कंप्यूटर के विकास के साथ अब त्वरित गति से बदल रही है। १९९१ में हुए खाड़ी युद्ध ने इस परिवर्तित प्रौद्योगिकी के आयुधों द्वारा भविष्य के युद्धों की एक झाँकी प्रस्तुत की है। उच्च प्रौद्योगिकी के कारण ही हम सब इस युद्ध को अपने ड्राइंगरूप से देख सके हैं। यह पुस्तक रक्षाविदों, रक्षा विज्ञान के विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के लिए तो उपयोगी है ही, साथ ही जनसाधारण तथा भविष्य की पीढ़ियों को परिवर्तित होती इस युद्ध-प्रौद्योगिकी की जानकारी देने में भी सहायक सिद्ध होगी।.

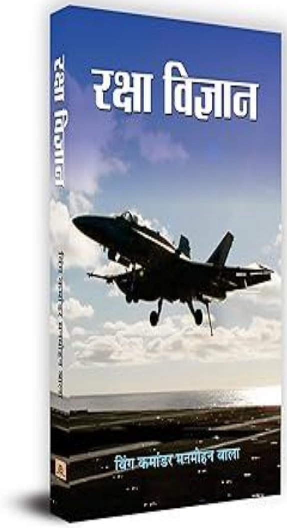

१८ राजयोग/ विवेकानंद, स्वामी- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; २००पृ. ५४०३८

राजयोग-विद्या इस सत्य को प्राप्त करने के लिए, मानव के समक्ष यथार्थ, व्यावहारिक और साधनोपयोगी वैज्ञानिक प्रणाली रखने का प्रस्ताव करती है। पहले तो प्रत्येक विद्या के अनुसंधान और साधन की प्रणाली पृथक्-पृथक् है। यदि तुम खगोलशास्त्री होने की इच्छा करो और बैठे-बैठे केवल 'खगोलशास्त्र खगोलशास्त्र' कहकर चिल्लाते रहो, तो तुम कभी खगोलशास्त्र के अधिकारी न हो सकोगे। रसायनशास्त्र के संबंध में भी ऐसा ही है; उसमें भी एक निर्दिष्ट प्रणाली का अनुसरण करना होगा; प्रयोगशाला में जाकर विभिन्न द्रव्यादि लेने होंगे, उनको एकत्र करना होगा, उन्हें उचित अनुपात में मिलाना होगा, फिर उनको लेकर उनकी परीक्षा करनी होगी, तब कहीं तुम रसायनविज्ञ हो सकोगे। यदि तुम खगोलशास्त्रज्ञ होना चाहते हो, तो तुम्हें वेधशाला में जाकर दूरबीन की सहायता से तारों और ग्रहों का पर्यवेक्षण करके उनके विषय में आलोचना करनी होगी, तभी तुम खगोलशास्त्रज्ञ हो सकोगे।

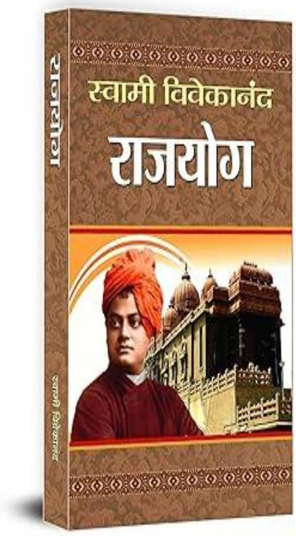

१९ राष्टीय स्वयसेवक संघ: स्वर्णिम भारत के दिशा सूत्र/ आम्बेकर, सुनील- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; २७२पृ. ५४०३९

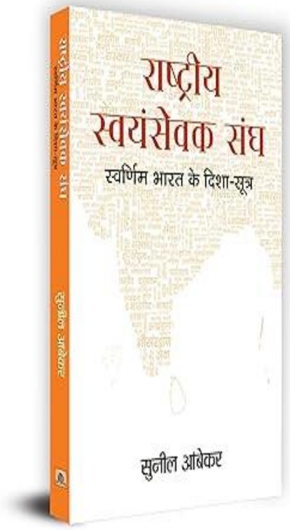

यद्यपि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की दीर्घ-यात्रा पर अनेक पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं, फिर भी संघ सदैव ही सुर्खियों में रहता है। हाल के दिनों में संघ के कामकाज को लेकर उत्सुकता बढ़ गई है, क्योंकि एक ओर इन दिनों में बहुत से स्वयंसेवक सरकार में शीर्ष पदों पर पहुँचे हैं, वहीं दूसरी ओर संघ के हिंदू-राष्ट्र और एकात्मता के मूल विचार अब हमारे सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र की मुख्यधारा बन गए हैं। भारत के लिए संघ का दृष्टिकोण क्या है? यदि भारत एक हिंदू-राष्ट्र बन जाता है, तो इसमें मुसलमानों और अन्य धर्मों का क्या स्थान होगा? इतिहास-लेखन की संघ की परियोजना कितनी बड़ी है? क्या हिंदुत्व जाति की राजनीति को खत्म कर देगा? परिवार की बदलती प्रकृति और विभिन्न सामाजिक अधिकारों पसंघ का क्या दृष्टिकोण है? संघ के वरिष्ठ प्रचारक सुनील आंबेकरजी ने इस पुस्तक में इन सवालों का विश्लेषण किया है। आंबेकरजी को तथ्यों की गहरी समझ है, इसी कारण से वे विचार की स्पष्टता और उसके विस्तार, दोनों पर ध्यान केंद्रित करने में सफल हुए हैं। एक स्वयंसेवक के रूप में उन्होंने शाखा पद्धति में कार्य किया है और उसे अपने जीवन में जिया है, उसी के आधार पर संघ की आंतरिक कार्य-प्रणाली, निर्णय-प्रक्रिया और समन्वयक-दृष्टि पर गहराई से दृष्टिपात किया है। वास्तविक जीवन के अनुभवों से भरपूर 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : स्वर्णिम भारत के दिशा-सूत्र' उन सभी के लिए एक पठनीय पुस्तक है, जो संघ-शक्ति की कार्यप्रणाली और इसकी भविष्य की योजनाओं को समझने के इच्छुक हैं।

२० लेटिन अमेरिका केरियाबाई छेत्र और भारत: संभावनानयी और चुनोतिया/ भोजवानी, दीपक- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; २६८पृ. ५४०४०

दीपक भोजवानी - १९७८ में भारतीय विदेश सेवा में प्रवेश; विदेश मंत्रालय और प्रधानमंत्री कार्यालय में महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य किया स्पेन, इंडोनेशिया, मलेशिया और चेक गणराज्य में भारतीय दूतावासों में कार्यरत रहे। अपने सेवा-काल के अंतिम १२ वर्षों, २००० से २०१२ तक, वे साओ पाओलो (ब्राजील) में कॉसल जनरल और फिर वेनेजुएला, कोलंबिया और क्यूबा में भारत के राजदूत रहे । साथ ही उन्हें एक्वाडोर, कोस्टा रिका, डोमिनिकन रिपब्लिक और हैती में भी राजदूत का अतिरिक्त कार्यभार दिया गया। उनकी यात्राओं और अनुभव से उन लैटिन अमेरिकी और कैरेबियाई देशों के बारे में एक समृद्ध दृष्टिकोण विकसित हुआ, जिनके साथ भारत के संपर्क अपेक्षाकृत कम रहे थे। इन देशों के साथ बढ़ते आर्थिक और व्यापारिक संबंधों ने राजदूत भोजवानी को यहाँ बने रहने तथा इस क्षेत्र की बेहतर समझ हासिल करने के लिए प्रेरित किया । स्पेनिश और पुर्तगाली भाषाओं में दक्षता की वजह से राजदूत भोजवानी इस क्षेत्र के देशों के अधिकारियों और पेशेवर विशेषज्ञों से बेहतर संपर्क और घनिष्ठ संबंध रख सके। राजदूत दीपक भोजवानी ने लैटिन अमेरिकी और कैरेबियाई देशों तथा भारत से उनके संबंधों के बारे में पुस्तकें लिखी हैं और अनेक व्याख्यान दिए हैं ।उनकी परामर्श-सेवा "लैटिनदिया' भारत तथा इस क्षेत्र के बीच संबंधों को और अधिक घनिष्ठ करने का प्रयास कर रही है।

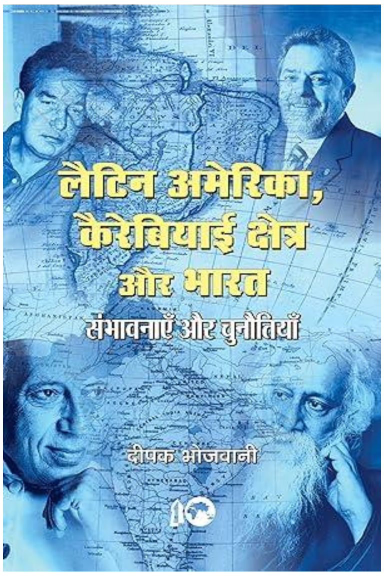

२१ लोकतंत्र में लोक/ आपटे, देवदास- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; १९९पृ. ५४०४१

वरिष्ठ समाजधर्मी श्री देवदास आपटे के सामाजिक दृष्टिकोण को दरशाते लेखों का पठनीय संकलन। उन्होंने 'लोक' के बीच अपना जीवन बिताया है। उनके सुख-दु:ख को देखा, सुना और आत्मसात् किया है। वह 'लोक' जिसका जीवन खुली किताब के रूप में होता है। ऐसा 'लोक' ग्रामीण जीवन का ही है। अत्यंत सहृदय और संवेदनशील, तो दूसरी तरफ हृदयहीन और कठोर भी। अज्ञान और ज्ञान से भरा हुआ। वह लोक, जो साफ-साफ बोलता है, सबको समझता है। पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं की गहरी जानकारी, उनके निदान की प्रबल व्यावहारिक सोच और अपनी राजनैतिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए देश के कोने-कोने में घूमते रहना आपटेजी के शौक हैं। अतीव संवेदनशील होने के कारण समस्याओं की जड़ तक जाना और उनका समाधान ढूँढ़ना, बेबाकी से बोलना और लिखना इनकी विशेषता रही है। नेता और जनता, शहर और गाँव, करणीय और अकरणीय में बना फासला दिनानुदिन बढ़ता गया है, इसके साथ समस्याएँ भी। देवदासजी के ये आलेख फासला पाटने की कोशिश करनेवालों के लिए जहाँ मार्गदर्शक हैं, वहीं नीतियाँ और कार्यक्रम बनानेवालों के लिए जानकारियाँ भी|

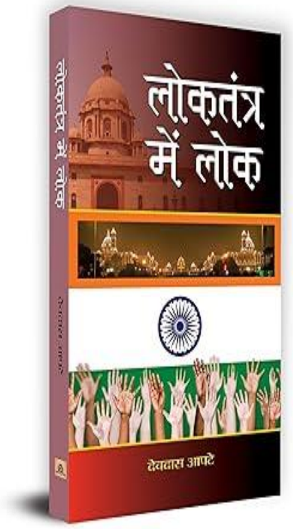

२२ विकास की राजनीति/ सहस्त्रबुद्धे, विनय- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; १६०पृ. ५४०४२

भारतीय जनता पार्टी देश की एक और राजनीतिक पार्टी भर नहीं है। अपने निर्माण व विकास के वर्षों में भाजपा खुद को पार्टी विद डिफरेंस (भिन्न किस्म का दल) के रूप में वर्णित कर गर्व महसूस करती रही है। एक के बाद एक आई दोनों वाजपेयी सरकारों ने यह प्रभावी तरीके से स्थापित कर दिया कि गठबंधन सरकारें टिकाऊ साबित हो सकती हैं, गैर-कांग्रेस सरकारें सफलतापूर्वक चल सकती हैं और इससे भी महत्त्वपूर्ण यह कि ऐसी सरकारें शासन में महत्त्वपूर्ण ढंग से योगदान दे सकती हैं, गवर्नेन्स का मूल्यवर्धन कर सकती हैं। किसी प्रकार के प्रच्छन्न या गोपनीय गैर-इरादों से मुक्त होने के कारण अपने राष्ट्रीय एजेंडे में भाजपा विकास का केंद्रीय महत्त्व सुनिश्चित कर सकी, जिसके मूल में मजबूत अर्थव्यवस्था थी। केंद्र और

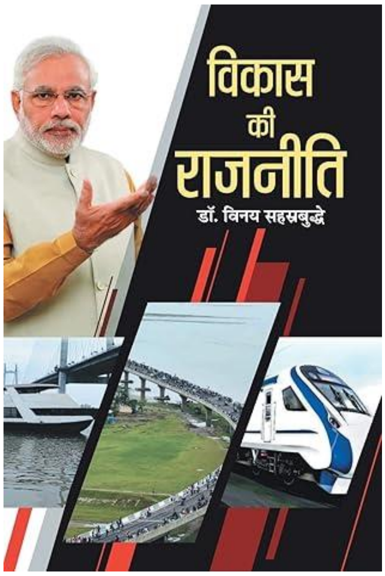

विभिन्न प्रदेशों में भाजपा सरकारों का प्रदर्शन साफ तौर पर अन्य राष्ट्रीय या क्षेत्रीय दलों से निर्विवाद कहीं अधिक बेहतर रहा है। यह पुस्तक उस मूल्य संवर्धन (वैल्यू एडिशन) का निचोड़ है, जो भाजपा ने भारतीय लोकतांत्रिक राजनीति में अपूर्व योगदान द्वारा किया है। भाजपा ने परिश्रमपूर्वक और पूरी दक्षता से भारतीयों के जीवन में गुणात्मक रूपांतरण करने का काम किया है। भारतीय राजनीतिक विमर्श में 'विकास की राजनीति' यह शब्दावली केवल स्थापित करने का ही नहीं, बल्कि उसे पूरी प्रामाणिकता से जमीन पर उतारने का श्रेय भी भाजपा को जाता है। प्रामाणिक इरादे, सोच-समझकर बनाई नीतियाँ और कार्यान्वयन के प्रभावी तौर-तरीके इन तीन मुद्दों के आधार पर इस 'विकास की राजनीति' को अपनाया गया है।

२३ वीर सावरकर/ माहुरकर, उदय- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; ३५२पृ. ५४०४३

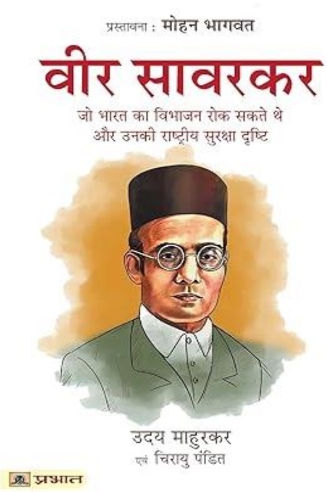

यदि भारत अपनी स्वाधीनता के ७५वें वर्ष की ओर देखता है तो वह देश के विभाजन के ७५वें वर्ष की ओर भी देखता है। यह संभवत: बीसवीं शताब्दी की विकटतम मानव त्रासदी थी, जिसने बड़े पैमाने पर अभूतपूर्व हिंसा देखी; और इस हिंसा की प्रणेता वे इच्छुक पार्टियाँ थीं, जिन्होंने अपने राजनीतिक एवं विचारधारात्मक कारणों से उसे भड़काया था। विभाजन की ओर प्रवृत्त करनेवाले वास्तविक कारणों का विश्लेषण करें तो उसका पाठ भारत की एकता एवं अखंडता में निहित है, जिसका प्रमाण वीर सावरकर द्वारा विभाजन को रोकने के लिए किए गए अथक प्रयासों में मिलता है। तार्किक रूप से भारत की राष्ट्रीय अखंडता के महानतम प्रतीक सावरकर को ओर से भारत की सुरक्षा के प्रति जो चेतावनियाँ दी गई थीं, वे विगत सात दशकों में सत्य सिद्ध हुई हैं।"वीर सावरकर" पुस्तक सावरकर जैसे तपोनिष्ठ चिंतक एवं भारत की सुरक्षा के जनक के उस पक्ष को प्रस्तुत करती है, जिससे भारत के विभाजन को रोका जा सकता था। इस पुस्तक में देश एवं उसकी नई पीढ़ी के समक्ष भारत विभाजन, जोकि तुष्टीकरण की राजनीति के कारण हुआ था, को सत्य कथा को प्रस्तुत

करने एवं इतिहास को परिवर्तित करने की उर्वरा है। आज देश को एकजुट बनाए रखने के लिए सावरकरवादी दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है।

२४ वेदांत: भविष्य का धर्म/ विवेकानंद, स्वामी- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; १४४पृ. ५४०४४

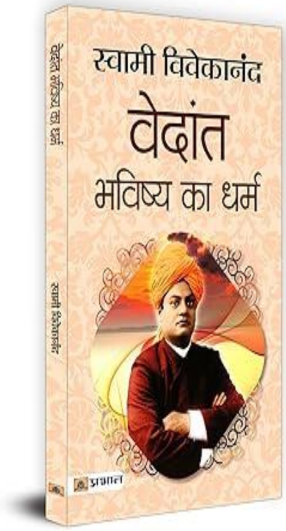

उनतालीस वर्ष की अल्पायु में स्वामी विवेकानंद जो काम कर गए, वे आनेवाली अनेक शताब्दियों तक पीढ़ियों का मार्गदर्शन करते रहेंगे।वे केवल संत ही नहीं थे, एक महान् देशभक्त, ओजस्वी वक्ता, प्रखर विचारक, रचनाधर्मी लेखक और करुणा से ओतप्रोत मानवताप्रेमी भी थे। अमेरिका से लौटकर उन्होंने देशवासियों का आह्वान करते हुए कहा था, “नया भारत निकल पड़े मोची की दुकान से, भड़भूजे के भाड़ से, कारखाने से, हाट से, बाजार से; निकल पड़े झाड़ियों, जंगलों, पहाड़ों, पर्वतों से ।" और जनता ने स्वामीजी की पुकार का उत्तर दिया। वह गर्व के साथ निकल पड़ी। गांधीजी को आजादी की लड़ाई में जो जन-समर्थन मिला, वह विवेकानंद के आह्वान का ही फल था। इस प्रकार वे भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के भी प्रमुख प्रेरणास्नोत बने । प्रस्तुत पुस्तक 'वेदांत भविष्य का धर्म' में स्वामीजी ने भारतीय अध्यात्म के दो आधारभूत ग्रंथों 'रामायण' और “महाभारत' के माध्यम से भारत के समाज का आध्यात्मिक, सामाजिक और मानसिक दृश्य खींचा है, जो भारतीय जनमानस के भावों का दिग्दर्शन कराता है।

२५ शिवाजी व सुराज/ दवे, अनिल माधव- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; २२९पृ. ५४०४५

शिवाजी और स्वराज हमारी आज की परिस्थिति में हम सबको आवश्यक प्रतीत होनेवाला नया निर्माण शिवाजी महाराज द्वारा जिर्पित तंत्र नेतृत्व व समाज की उन्हीं शश्वत आधारभूत विशेषताओं को ध्यान में रखकर करना पड़ेगा। इस दृष्टि से अध्ययन व चिंतन को गति देनेवाला यह ग्रंथ है। शिवाजी ने सभी वर्गों को राष्ट्रीय ता की भावना से ओतप्रोत किया और एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण किया जिसमें सभी विभागों का सृजन एवं संचालन कुशलता से हो। पुर्तगाली। वाइसराय काल द सेंट ह्विंसेंट ने महाराज की तुलना सिकंदर और सीजर से की। दुर्भाग्य से कुछ भारतीय इतिहासकारों ने शिवाजी को समुचित सम्मान नहीं दिया। भारत केवल सौदागरों के खेल का मैदान बन गया है, यह कटु है, पर सत्य है। शिवाजी महाराज की राजनीति और राज्यनीति मानों अमृत और संजीवनी दोनों ही हैं। छत्रपति शिवाजी महाराज की शासन व्यवस्था एक सप्रयोग सिद्ध किया हुआ महाप्रकल्प ही है। श्री अनिल दबे ने इस पुस्तक में हमें उसी से परिचित करवाया है। भारत की संसद और प्रत्येक विधानसभा के सदस्य को इस पुस्तक का अध्ययन करना चाहिए। बाबा साहेब पुरंदरे, पुणे * राजा को (नेतृत्वकर्ता ने) स्वयं के खाने-पीने का समय निश्चित करना चाहिए। सामान्यत: उसे नहीं बतलाना चाहिए। राजा को नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए। अपने आस-पास कार्यरत व्यक्तियों को भी इन पदार्थों का सेवन नहीं करने देना चाहिए। राजा के पास जब शस्त्र न हो तो उसे लंबे यमस तक निरंतर धरती को नहीं देखते रहना चाहिए। * कार्य के प्रारंभ में शपथ लेते समय उसका (नायक का) स्वकोष व राज कोष कितना था? और जब वह निवृत होकर गया तब दोनों कोष की क्या स्थिती थी? इनका अंतर ही उसका वितिय चरित्र है। * शिवाजी–"कान्होजी, आपको इसे मृत्युदंड न देने का वचन दिया था सो उसका पालन किया लेकिन कोई भी सजा (खंडोजी खेपडा को) न दी जाती तो स्वराज में लोगों को क्या संदेश जाता कि देशद्रोह और परिचय में परिचय बड़ा है! क्या यह स्वराज के लिए उचित होता?' ' * प्रत्येक नायक का यह प्रथम कर्तव्य है कि वह गद्ंदार को सबसे पहले अपनी व्यवस्था से दूर

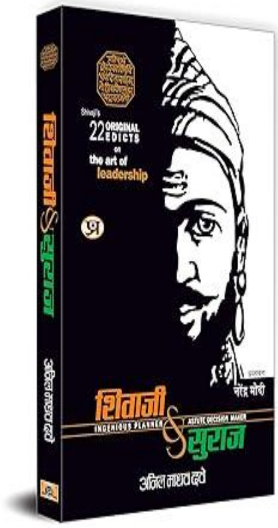

करे, उसे सजा दिलवाए और गद्दारी की प्रवृति को पनपने से कठोरता पूर्वक रोके।

२६ सामाजिक समरसता/ मोदी, नरेंद्र- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; २४८पृ. ५४०४६

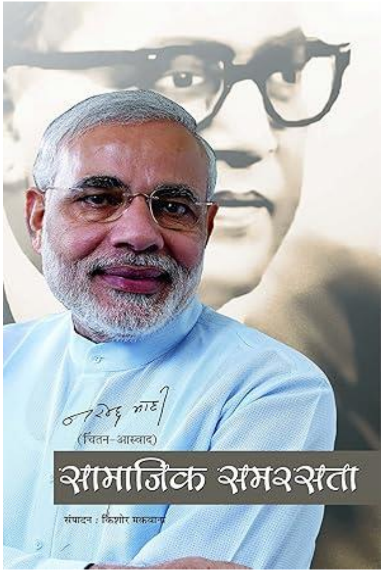

अंग्रेजों ने हिंदुत्व को, राष्ट्रीयत्व को क्षीण करने का षड्यंत्र रचा, जिसे डॉ. बाबा साहब अंबेडकरजी ने समझा और समाज में आई बुराईयों को दूर करने का बीड़ा उठाया। वंचित वर्ग में प्रेरणा जगाकर उसमें ऊपर उठने की ललक जगाई। उसी प्रकार गुजरात के लोकप्रिय मुख्यमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भी समाज में व्याप्त दुःख और अभावों को दूर करने का संकल्प लिया। उन्होंने समरस समाज के विचार को प्रतिष्ठित करने का सत्प्रयास किया। समाज के विविध प्रश्नों को देखने का उनका अपना ही दृष्टिकोण है। नरेंद्र मोदी की समाज के प्रति जो संवेदना है, वंचितों के प्रति जो कर्तव्य-भाव है और सामाजिक समरसता के लिए जो प्रतिबद्धता है, वह उनके भाषणों में, उनके लेखों में तथा उनके कार्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।किसी भी राज्य के संपूर्ण विकास का मापन राज्य के वंचितों-पीड़ितों के विकास (कष्ट निवारण) के आधार पर होता है। सच्चा सर्वांगीण विकास वही है, जिसमें अंतिम छोर में निवास करने वाले छोटे-से-छोटे आम आदमी तक विकास का फल पहुँचे। श्री नरेंद्र मोदी के शासन का अधिष्ठान ऐसा ही 'कल्याणकारी राज्य' रहा है। उनके जीवन-कार्य का केंद्रबिंदु भी समाज के अंतिम पायदान पर खड़ा सामान्य आदमी ही है। यह पुस्तक श्री नरेंद्र मोदी के विचारशील व चिंतनपरक लेखों का संकलन है। इसमें आमजन के प्रति उनके ममत्व भाव, सुख-दुःख में सहभागिता तथा विचार-चिंतन की श्रेष्ठता, समाज के प्रति संवेदना एवं सामाजिक समरसता के प्रति वचनबद्धता को साक्षात् अनुभव किया जा सकता है।

२७ सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के अग्रदूत: पं. दीनदयाल उपाध्याय/ गुरुदेव, गुप्तिसागरजी- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; २६२पृ. ५४०४७

पं. दीनदयाल उपाध्याय बीसवीं शताब्दी को अपने विलक्षण व्यक्तित्व, अपरिमेय कर्तृत्व एवं क्रांतिकारी दृष्टिकोण से प्रभावित करनेवाले युगद्रष्टा ऋषि, महर्षि एवं ब्रह्मर्षि थे। उपाध्यायजी के पुरुषार्थी जीवन की सबसे बड़ी पहचान है गत्यात्मकता। वे अपने जीवन में कभी कहीं रुके नहीं, झुके नहीं। यही कारण है कि समस्त प्रतिकूलताओं के बीच भी उन्होंने अपने लक्ष्य के दीप को सुरक्षित रखते हुए उदभासित किया। उन्होंने राष्ट्र-प्रेम को सर्वोच्च स्थान देने के साथ-साथ, शिक्षा, साहित्य, शोध, सेवा, संगठन, संस्कृति, साधना सभी के साथ जीवन-मूल्यों को तलाशा, उन्हें जीवन-शैली से जोड़ा। इस पुस्तक में पंडितजी को एक ऐसे राजनेता के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिन्होंने न केवल स्वयं भारत को भारत के दृष्टिकोण से जानने-समझने-देखने की दृष्टि विकसित की, अपितु दूसरों को भी वैसी ही संदृष्टि प्रदान की। भारत की चिति एवं प्रकृति के मौलिक एवं सूक्ष्म द्रष्टा थे 'पं. दीनदयाल उपाध्यायजी, जिन्होंने सही अर्थों में व्यष्टि एवं समष्टि के चिरंतन सत्य एवं सदियों के अनुभव का साक्षात्कार कर, एक ऐसे उदबोध को प्रवृत्त किया, जिसका स्पंदन भारत की माटी में समाहित है। यह कृति “सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के अग्रदूत : पं. दीनदयाल उपाध्याय ' पंडितजी के विचार पाथेय को जन-जन तक पहुँचाने में निमित्त बनेगी और भारतीय संस्कृति के बिंब, जन-संस्कृति के रूप में वैश्विक धरातल पर नई चेतना को स्फूर्त करेगी; ऐसा दृढ़ विश्वास है।

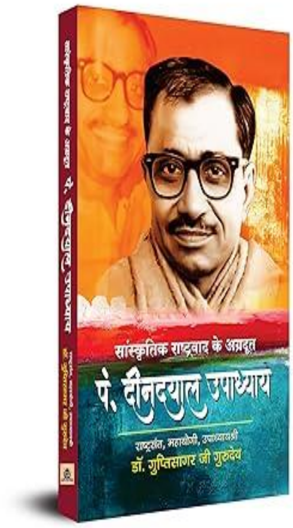

२८ स्टार्टअप हो तो ऐसा हो/ रघुरामन, न.- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; १२६पृ. ५४०४८

आज स्टार्टअप भारतीय इकोनॉमी का बहुत महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गए हैं। अनेक युवा अच्छे वेतन की नौकरी छोड़कर अपना स्टार्टअप बनाकर अप्रतिम सफलता प्राप्त कर अर्थव्यवस्था को गति दे रहे हैं।कम होती नौकरियों और बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण आज स्टार्टअप लोकप्रिय हो रहे हैं—और सफल भी। यह पुस्तक आपको इस क्षेत्र के सफल और व्यावहारिक अनुभवों की जानकारी देकर आपकी दृष्टि और सोच को नए आयाम देगी, जिनसे आप भी सफलता के नए सोपान चढ़ पाएँगे।

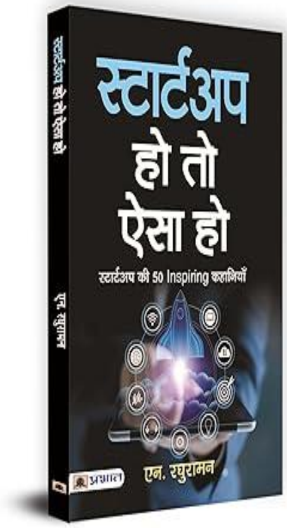

२९ हमारे बालासाहब देवरसजी/ राय, रामबहादुर- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; ४५६पृ. ५४०४९

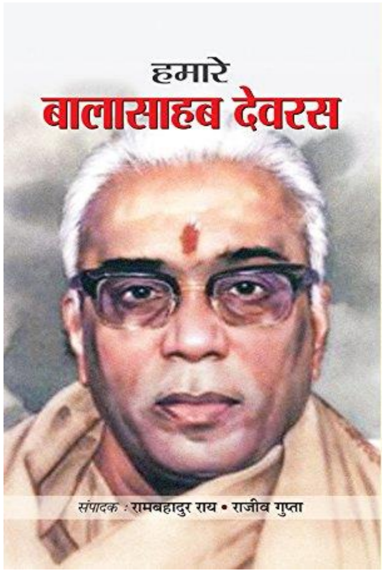

बालासाहब देवरसजी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तीसरे सरसंघचालक थे। उनका जीवन अत्यंत सरल था तथा वे मिलनसार प्रवृत्ति के थे, परंतु प्रसिद्धि से कोसों दूर रहने के साथ-साथ वे कुशल संगठक और दूरदृष्टा थे। बालासाहबजी के जीवन को समझने हेतु पाठकों के लिए इस पुस्तक में बाबू राव चौथाई वालेजी का संस्मरण उल्लेखनीय है। पुणे में चलनेवाली बसंत व्याख्यानमाला में हुए बालासाहबजी के ऐतिहासिक भाषण ने इस बात को प्रमाणित किया कि वे सामाजिक समरसता के अग्रदूत थे। उन्होंने अपने एक भाषण में कहा था, "यदि छुआछूत पाप नहीं है तो इस संसार में कुछ भी पाप नहीं है। वर्तमान दलित समुदाय जो अभी भी हिंदू है, जिन्होंने जाति से बाहर होना स्वीकार किया, किंतु विदेशी शासकों द्वारा जबरन धर्म परिवर्तन स्वीकार नहीं किया।" राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर शासन द्वारा लगाए गए तीनों प्रतिबंधों (वर्ष १९४८, १९७५ और १९९२) के बालासाहबजी साक्षी रहे थे। उनके कार्यकाल में ही देश के अंदर कई ऐतिहासिक घटनाएँ घटित हुईं—ऑपरेशन ब्लू स्टार हुआ, पंजाब की समस्या, आरक्षण विवाद, शाहबानो प्रकरण, अयोध्या आंदोलन चला इत्यादि। ऐतिहासिक पुरुष बालासाहब देवरसजी के प्रेरणाप्रद जीवन का दिग्दर्शन कराती पठनीय पुस्तक|

३० हिन्दु धर्म हमारा जनप्राप्त धर्म/ विवेकानंद, स्वामी- प्रभात ५४०५०
प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२३; १६८पृ.

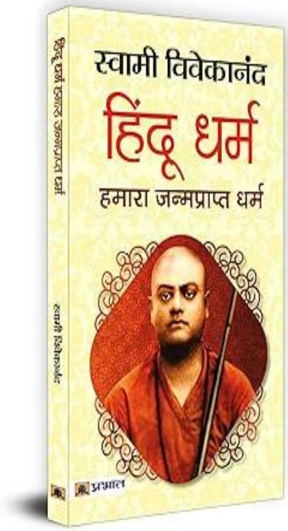

तुम लोग आर्य, ऋषियों के वशंधर हो ऋषियों के, जिनकी महत्ता की तुलना नहीं हो सकती। मुझे इसका गर्व है कि मैं तुम्हारे देश का एक नगण्य नागरिक हूँ। अतएवं भाइयो, आत्मविश्वासी बनो। पूर्वजों के नाम से अपने को लज्जित नहीं, गौरवान्वित समझो। याद रहे, किसी का अनुकरण कदापि न करना, कदापि नहीं। जब कभी तुम औरों के विचारों का अनुकरण करते हो, तुम अपनी स्वाधीनता गँवा बैठते हो। –इसी पुस्तक से प्रस्तुत पुस्तक 'हिंदू धर्म : हमारा जन्मप्राप्त धर्म' में स्वामीजी ने सरल शब्दों में वेदप्रणीत हिंदू धर्म, उसकी सार्वभौमिकता, उसकी उदारता, व्यापकता और सर्वधर्म समभाव की उसकी मौलिकता की अनिर्वचनीय व्याख्या की है और मानव-मन में हिंदू धर्म को लेकर सदा से पनपते कतिपय अनुत्तरित प्रश्नों के सटीक व तार्किक उत्तर दिए हैं। एक अत्यंत प्रेरक, रोचक और ओजपूर्ण पुस्तक, जो जीवन में दैविक आशा का संचार करती है।

लेखक अनुक्रमणिका

लेखक	क्रं.सं.
आपटे, देवदास	२१
आम्बेकर, सुनील	१९
कलाम, ए. पी. जे .अब्दुल	८, १०, १४
गुरुदेव, गुप्तिसागरजी	२७
दवे, अनिल माधव	२५
नरीमन, फली	१२
प्रशांत, आचार्य	११
बाला, मनमोहन	१७
भोजवानी, दीपक	२०
माहुरकर, उदय	२३
मोदी, नरेंद्र	२६
रघुरामन, न.	२८
रथ, सरोज कुमार	९
राय, रामबहादुर	२९
विवेकानंद, स्वामी	३, ५, ७, १६, १८, २४, ३०
शोरी, अरुण	२
सहस्त्रबुद्धे, विनय	२२
सावरकर, विनायक दामोदर	१३
सिंह, अजय	१
सिंह, कर्नल	६

सिंह, भगत	१५
सेकिव, वॉलटर	४

कीवर्ड अनुक्रमणिका

कीवर्ड	क्रं.सं.
अंडमान निकोबार	१३
अंतरराष्ट्रीय संबंध	२०
आचार्य प्रशांत	११
आंतकवाद	२
आंतरिक बंधन	११
आध्यात्मिक विज्ञान	१८
इंडियन मुजाहिद्दीन	६
औद्योगिक क्रांति	१७
कल्याणकारी राज्य	२६
कालापानी	१३
क्रांतिकारी विचारधारा	१५
क्सेनोग्लॉसी (परा-भाषा)	४
ग्रामीण जीवन	२१
छत्रपति शिवाजी महाराज (१९ फरवरी १६३०-३ अप्रैल १६८०)	२५
डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम (१५ अक्टूबर १९३१-२७ जुलाई २०१५)	१०
दिल्ली पुलिस	६
नास्तिकता	१५
न्यायपालिका	१२
पं. दीनदयाल उपाध्याय (२५ सितम्बर १९१६-११ फरवरी १९६८)	२७

पारा-मनोविज्ञान	४
पुर्नजन्म	४
प्रक्षेपण यान	१४
प्रशासनिक कुशलता	२५
प्राचीन साहित्य	९
प्रेमयोग	५
प्रेमोन्मत्तता	७
बँगलादेशी घुसपैठियों	२
बाटला हाउस	६
बालासाहब देवरसजी (११ दिसंबर १९१५-१७ जून १९९६)	२९
बाह्य बंधन	११
भक्तियोग	७
भारत	२, ८
भारत विभाजन	२३
भारत-अफगानिस्तान संबंध	९
भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम	१०
भारतीय जनता पार्टी (भाजपा)	१, २२
भारतीय मिसाइल कार्यक्रम	१०
भारतीय राजनीति	१
भारतीय विदेश सेवा	२०
भारतीय संविधान	१२
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम	१५

मिसाइल तकनीक	१४
यात्रा-वृत्तांत	३
युद्ध प्रौद्योगिकी	१७
युवा उद्यमिता	२८
योग साधना	१८
योगाभ्यास	१६
राजदूत	२०
राजनीतिक दल	२२
राजनीतिक दृष्टिकोण	२७
राजनीतिक नैतिकता	२५
राजनीतिक वर्ग	१२
राजयोग	१८
रामायण और महाभारत	२४
राष्ट्रीय अखंडता	२३
राष्ट्रीय एजेंडा	२२
राष्ट्रीय विकास नीति	८
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ	१९, २९
विकसित भारत	१४
विचारशील नेतृत्व	२६
वेदांत दर्शन	५, २४
व्यावसायिक सफलता	२८
शाश्वत मुक्ति	७

शिल्पकार	१
संघ विचारधारा	१९
समाजधर्मी विचारक	२१
सरसंघचालक	२९
सर्वांगीण विकास	२६
संस्कृत साक्ष्य	९
सामाजिक दृष्टिकोण	२१
सामाजिक रूपांतरण	८
सांस्कृतिक राष्ट्रवाद	२७
सेलुलर जेल	१३
सैन्य विज्ञान	१७
स्टार्टअप	२८
स्वस्थ जीवनशैली	१६
स्वाधीनता	३०
स्वामी विवेकानंद (१२ जनवरी १८६३-४ जुलाई १९०२)	३, ५, १६, २४, ३०
हिंदू धर्म	३, ३०
हिंदू राष्ट्र	१९
७५वाँ स्वतंत्रता वर्ष	२३